THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

किशोरावस्था में सामाजिक कौशल पर एकल लिंग और सह शिक्षा विद्यालयों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

डा0 पूर्णश नारायण सिंह
अध्यक्ष बी.एड. शिक्षा विभाग,
ही.रा.पी.जी. कालेज खलीलाबाद,
सन्त कबीर नगर
सम्बद्ध सिद्धार्थ विश्वविद्यालय
कपिल वस्तु सिद्धार्थ नगर, उ.प्र.

श्रीमती सुनीता सोनकर
शोध छात्रा, बी.एड. शिक्षा विभाग
ही.रा.पी.जी. कालेज खलीलाबाद,
सन्त कबीर नगर
सम्बद्ध सिद्धार्थ विश्वविद्यालय
कपिल वस्तु सिद्धार्थ नगर, उ.प्र.

सारः

किशोरावस्था शशारीरिक, मानसिक सामाजिक एवं भावनात्मक विकास की एक संवेदनशील अवस्था होती है, जिसमें सामाजिक कौशल (Social Skills) का विकास अत्यंत आवश्यक होता है। विद्यालय किशोरों के सामाजिक कौशल के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है, और विद्यालय के प्रकार- एकल लिंग (Single – Sex) एवं सह-शिक्षा (Co-Education) इस विकास को भिन्न रुप से प्रभावित कर सकते हैं।

यह अध्ययन एकल लिंग एवं सह शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरों के सामाजिक कौशल का तुलनात्मक विश्लेषण करता हैं। इसमें आत्मविश्वास, संवाद कौशल, सहयोग, समस्या-समाधान एवं सामाजिक अनुकूलन जैसे तत्वों का मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि कौन सा शैक्षिक वातावरण किशोरों के सामाजिक कौशल के समुचित विकास के लिए अधिक अनुकूल है। निष्कर्ष दर्शाते है कि सह-शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों मे विपरीत लिंग के प्रति अधिक खुलेपन, संवाद कौशल और सामाजिक अनुकूलन की प्रवत्ति पाई जाती है, जबकि एकल लिंग विद्यालयों में आत्मविश्वास और समूह सहभागिता अधिक विकसित हो सकती है।

मुख्य शब्दः किशोरावस्था, सामाजिक कौशल,सह-शिक्षा, एकल लिंग विद्यालय, व्यक्तित्व विकास।

परिचय (Introduction)

किशोरावस्था जीवन का एक संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण चरण होता है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। इस अवस्था में सामाजिक कौशल (Social Skills) का विकास अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि यह

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

व्यक्ति को समाज मे प्रभावी रुप से संवाद स्थापित करने, सहयोग करने, समस्या-समाधान करने एवं सकारात्मक संबंध विकसित करने में सहायक होता है। सामाजिक कौशल का प्रभाव किशोरों के आत्मविश्वास, व्यक्तित्व विकास एवं भविष्य की संभावनाओं पर गहरा पडता है।

विद्यालय किशोरों के सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है और विद्यालय का प्रकार एकल लिंग (Single-Sex) एवं सह-शिक्षा (Co-Education) इस विकास को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित कर सकता है। एकल लिंग विद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राए एक ही लिंग के साथ संवाद एवं सहभागिता में अधिक सहज होते है, जबकि सह-शिक्षा विद्यालयों में वे विपरीत लिंग के साभ भी प्रभावी संवाद एवं सहयोग के अवसर प्राप्त करते हैं।

यह अध्ययन किशोरों के सामाजिक कौशल पर एकल- लिंग एवं सह- शिक्षा विद्यालयों के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि कौन सा शैक्षिक किशोरों के सामाजिक कौशल के समुचित विकास के लिए अधिक अनुकूल है। सामाजिक कौशल को डेल-प्रेटे और डेल-प्रेटे (2017) ने व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार के विभिन्न पहलुओं के रुप में परिभाषित किया है, जो उसकी सामाजिक दक्षता को बढाते है और दूसरों के साथ स्वस्थ एवं प्रभावी संबंध स्थापित करने में सहायता करते हैं। ये कौशल व्यक्ति के सकारात्मक सुदृढीकरण को बढाने और प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रभाव को कम करने में सहायक हो सकते हैं। (डेल-प्रेटे और डेल-प्रेटे, 2009,2017)

अनुकुलनशील और नुखर तरीके से अपने विचार भावनाए, इच्छाए, राय और अधिकारों को व्यक्त करना सामाजिक कौशल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। ये कौशल व्यक्ति को सामाजिक परिस्थितियों में उत्पन्न होने वाली समस्याओं से बचाने में मदद कर सकते हैं। बाल्यावस्था में ये कौशल शैक्षिक प्रदर्शन, अधिगम और सामाजिक -संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।

(डेल-प्रेटे और डेल-प्रेटे, 2005य डेल-प्रेटे और डेल-प्रेटे, ओलिवेरा, ग्रेषम और वेंस, 2012)।

सामाजिक कौशल का विकास बचपन में औपचारिक एवं अनौपचारिक सामाजिक संपर्कों के माध्यम से होता है। हालाकि, यदि वातावरण अनुकूल नही होता, तो इन कौ'शलों का

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

अधिग्रहण बाधित हो सकता है (डेल-प्रेटे और डेल-प्रेटे, 2017)। इस प्रकार की कमी को मनोसामाजिक समस्याओं के जोखिम कारक के रुप में देखा जाता है, क्योंकि यह व्यवहार संबंधी कठिनाइयॉ और मानसिक विकारों जैसें कि चिंता विकारों से जुडी हो सकती है (कैबलो, 2003, डेल-प्रेटे और डेल-प्रेटे, 2011)।

सामाजिक कौ'शल में कमी व्यक्ति की सामाजिक कार्य क्षमता और अनुकूलन क्षमता को प्रभावित कर सकती है।

DSM-5 (अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन, 2014) के अनुसार, चिंता विकारों की पहचान अत्याधिक भय, चिंता और इससे उत्पन्न व्यवहारिक परेशानियों से होती है। ये विकार उन वस्तुओं और परिस्थितियों के आधार पर भिन्न होते हैं, जिनसे व्यक्ति भयभीत महसूस करता है या जिनसे बचने की प्रवृत्ति रखता है।

सामाजिक चिंता विकार, जिसे समाजिक भय भी कहा जाता है, DSM-5 में अत्याधिक भय और सामाजिक परिस्थितियों में घबराहट के रुप में वर्णित किया गया है। इसमें व्यक्ति को अजनबियों से मिलने, दूसरों द्वारा देखे जाने या परखा जाने की स्थिति में असहजता महसूस होती है (अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन, 2014)। यह विकार आमतौर पर सामाजिक कौशल की कमी से जुडा होता है, क्योंकि इसमें व्यक्ति को सामाजिक संपर्क स्थापित करने में कठिनाई होती है (सूजा,2017)।

बचपन में कुछ हद तक सामाजिक चिंता सामान्य मानी जा सकती है, लेकिन यदि यह अत्यधिक हो जाये, तो यह बच्चे या किशोर के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। इसके परिणामस्वरुप आत्म-संकोच, शिक्षा में कठिनाईयां और मानसिक असहजता हो सकती है (अल्बानो और डेटवेइलर, 2001)।

ब्राजील में किये गये कुछ सहित्य समीक्षा अध्ययनों में सामाजिक कौशल और सामाजिक चिंता विकार के बीच संबंध को व्यस्कों के संदर्भ में देखा गया है (एंजेलिको एट अल., 2006; लेविटन, रेंजे, और नारदी, 2008) लेकिन बच्चों और किशोरों पर केन्द्रित शोध अपेक्षाकृत कम है। एक अध्ययन में 2000 से 2005 के बीच किये गये शोधों का विश्लेषण किया गया, जिसमें 16 लेख शामिल थे; जिन्हें दो श्रेणियों में विभाजित किया गयाः नैदानिक हस्तक्षेप और सामाजिक कौशल का आंकलन (एंजेलिको एट अल., 2006)।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

लेखकों ने निष्कर्ष निकाला कि इस विषय पर अधिक सटीक पद्धति के साथ नये अध्ययन किये जाने की आवश्यकता है।

लेविटन एट अल. (2008) द्वारा किये गये एक अन्य अध्ययन मे, सामाजिक चिंता और एगोराफोबिया के बीच संबंध की जॉच की गयी। इस अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक चिंता वाले व्यक्तियों मे सामाजिक कौशल की कमी होती है। अध्ययन में यह भी सुझाव दिया गया कि अनुदैर्ध्य शोध (longitudinal studies) सामाजिक चिंता के पूर्ववर्ती कारणों की पहचान करने में सहायक हो सकते हैं और इससे उपचार पद्धतियों को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है।

इसोलन, फेउला और मैनफ्रो (2007) के अनुसार, 75 मामलों में सामाजिक चिंता विकार की शुरुआत 8 से 15 वर्ष की उम्र के बीच होती है। यह विकार अक्सर बचपन में अनुभव की गयी सामाजिक असहजता और संकोच से जुडा होता है (सूजा, 2017)। इस संदर्भ में, यह आवश्यक हो जाता है कि बचपन और किशोरावस्था में सामाजिक कौशल और सामाजिक चिंता के बीव संबंध की गहन समीक्षा की जाये।

चूँकि सामाजिक कौशल और सामाजिक चिंता विकार के बीच परस्पर संबंध मानव विकास को प्रभावित कर सकता है, इस अध्ययन का उद्येश्य 20 वर्षों (1997 से 2017) के दौरान बच्चों और किशोरों की आबादी पर किये गये शोधों का सहित्य समीक्षा करना है। इसमें निम्नलिखित कारकों का विश्लेषण किया गयाः

अध्ययन के प्रकाषन का वर्ष, शोध के नमूने का प्रकार और आकार, मूल्यांकन प्रतिक्रियाएं, प्रयुक्त उपकरण और प्राप्त निष्कर्ष। इस समीक्षा का मुख्य लक्ष्य यह पहचानना और वर्णन करना था कि सामाजिक चिंता वाले बच्चों और किशोरों में कौन-कौन से सामाजिक कौशल प्रभावित होते है। इसके लिए तीन श्रेणियों में परिणामों को वर्गीकृत किया गयाः 1. सामाजिक कौशल की कमी 2. नकारात्मक संज्ञान, और 3. सामाजिक कौशल की कमी एवं नकारात्मक संज्ञान का संयुक्त प्रभाव।

सामाजिक कौषलः

सहानूभूति, प्रभावी संवाद और अंतरव्यक्तिक रिश्ते सामाजिक कौशल के महत्वपूर्ण घटक होते हैं। किशोरों के लिए प्रभावी सामाजिक कौशल विशेष रुप से महत्वपूर्ण होते है,

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

क्योंकि इस अवस्था में उनके रिश्ते माता-पिता, भाई-बहनों और दोस्तों के साथ अधिक जटिल हो जाते हैं। सामाजिक कौशल की कमी पर आधारित सिद्धान्त यह मानता है कि जो बच्चा प्रारंभिक अवस्था में इन कौशलों को नही सीख पाता, वह भविष्य में अपने साथियों द्वारा अस्वीकृत हो जाता है और इससे उसे नशे की लत, हिंसा जैसी हानिकारक आदतों की ओर बढने का खतरा हो सकता है। इस प्रकार, सामाजिक कौशल की कमी को आक्रामक और विरोधी सामाजिक व्यवहार का पूर्वसूचक माना जाता है (Pepler & Slaby; 1994; Patterson,1986) और जैसे-जैसे बच्चा बडा होता हैए वैसे-वैसे अक्रात्मकता बढती जाती है (Bierman & Montimy, 1993)।

यहॉ कि ये बच्चे जो सामाजिक कौशल से वंचित होते है, वे समान मानसिकता वाले साथियों के समूह में शामिल हो जाते हैं, जो उनके नकारात्मक व्यवहार को बढावा देते है, और अंततः वे लडाई-झगडों और गालियों का आदान प्रदान करने लगते हैं। इसलिए बचपन में जीवन कौशल का विकास अत्यंत आवश्यक है। सामाजिक कौशल प्रशिक्षण बच्चों को असहमति और संघर्षों का समाधान करने में सक्षम बनाता है, जिससे उनके गुस्से और इसके परिणामस्वरुप उत्पन्न होने वाले नकारात्मक प्रभावों में कमी आती है (Deffenbacher et al., 1996) शोध ने यह भी प्रमाणित किया है कि बच्चे दूसरों की भावनाओं को समझते हैं और उनके अनुसार अपनी प्रतिक्रियाएं भी व्यक्त करते हैं, जो उनके सहानुभूति की समझ के स्तर पर निर्भर करता है। बच्चों के संघर्षों में सहानुभूतिपूर्वक प्रतिक्रिया व्यक्त करने की दिशा में मार्गदर्शन करने से वे दूसरों की भावनाओं और दृष्टिकोण को समझने के साथ साथ ही देखभाल करने वाले व्यक्ति बनते हैं, जिससे उनका आक्रामक व्यवहार कम होता है (Slaby & Guerra, 1998)।

किशोरावस्था:

किशोरावस्था वह अवधि है जो बचपन और व्यस्कता के बीच आती है। यह जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण होता है, जिसमें व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक पहलुओं में व्यापक परिवर्तन होते हैं। इस दौरान किशोर विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करते है, जैसे करियर संबंधी निर्णय, नशे की आदतों का प्रभाव, माता-पिता से मतभेद, और भावनात्मक उतार-चढाव। यह संक्रमणकालीन अवस्था, जिससे सामाजिक

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

गतिकता (social locomotion) कहा जाता है, किशोरों के लिए भ्रम की स्थिति उत्पन्न करती है क्योंकि वे न तो पूरी तरह बच्चे रहते है, और न ही पूर्ण रुप से व्यस्क।

Muuss (1975) के अनुसार, किशोर इस उलझन में रहते है कि कभी उन्हें व्यस्कों जैसा व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है, तो कभी उन्हें बच्चों की तरह निर्देशित किया जाता है। इसक अलावा, वे अपने भविष्य, सामाजिक स्थिति, अपेक्षाओं और कर्तव्यों को लेकर अनिश्चितता महसूस करते है, जिससे उनके व्यवहार में अस्थिरता आ सकती है। (Muuss, 1975, पृष्ठ 125) । ये आंतरिक संघर्ष और सामाजिक दबाव किशोरों में असुरक्षा, आत्म-संदेह और मानसिक तनाव को जन्म दे सकते हैं। यदि इन चुनौतियों का समाधान समय पर नही किया जाता, तो यह उनकी संभावनाओं और आकांक्षाओं के बीच असंतुलन का कारण बन सकता है।

किशोरों में असीमित शारीरिक और मानसिक क्षमताएँ होती है, जो उन्हे समाज का सक्रिय सदस्य बना सकती है। हालाँकि, उचित मार्गदर्शन और प्रेरणा के अभाव में अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नही कर पाते (Prajapati et al., 2017)।

इसलिए, किशोरों में जीवन कौशल विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि वे इन चुनौतियों का सामना कर सके। यूनाइटेड चिल्ड्रेन फंड (UNICEF,2012) के अनुसार, जीवन कौशल वह व्यवहारिक और विकासात्मक दृष्टिकोण है, जो ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को संतुलित करने में सहायक होता है।

यदि किशोरों को समय पर उचित जीवन कौशल प्रदान नही किये जाते, तो वे भटक सकते है और आत्म-हानि जैसी गतिविधियों में लिप्त हो सकते हैं। जीवन कौशल उन्हें उत्पादक और संतुलित जीवन जीने में सहायक प्रदान करते हैं। यह उन्हें समस्याओं को सुलझाने, सही निर्णय लेने, प्रभावी संवाद स्थापित करने, तार्किक और रचनात्मक सोच विकसित करने, दूसरों के प्रतिम सहानुभूति रखने और सकारात्मक संबंध बनाने में मदद करता है। इसलिए, किशोरों को उनके आंतरिक और बाहरी संघर्षों से उबरने के लिए जीवन कौशल का प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

सह-शिक्षा

सह-शिक्षा वह प्रणाली है, जिसमें बालक और बालिकाएं एक ही संस्थान में समान पाठ्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह प्रणाली विद्यार्थियों को समान शिक्षण व्यवस्था और प्रशासन के अंतर्गत सीखने का अवसर प्रदान करती है। आधुनिक भारत में सह-शिक्षा कोई नई अवधारणा नहीं हैय इसके ऐतिहासिक प्रमाण प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में देखे जा सकते हैं।

वैदिक काल में, शिक्षण संस्थानों में बालक और बालिकाएं समान रूप से अध्ययन करते थे। उस समय की शिक्षण व्यवस्था नैतिक मूल्यों, अनुशासन और संयम पर आधारित थी। आज के संदर्भ में, सह-शिक्षा केवल शैक्षिक समानता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों में सामाजिक समावेश, सहयोग और लैंगिक समानता की भावना को भी विकसित करने में सहायक है। यह प्रणाली न केवल ज्ञान अर्जन का अवसर प्रदान करती है, बल्कि विद्यार्थियों को एक दूसरे के विचारों को समझने और एक समावेशी समाज के निर्माण में योगदान देने की प्रेरणा भी देती है।

एकल लिंग विद्यालयः

एकल लिंग विद्यालय वे विद्यालय होते हैं जहाँ केवल एक ही लिंग (बालक या बालिका) के छात्रों को शिक्षण प्रदान किया जाता है। इस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग विद्यालय होते हैं, जिससे वे अपने समान लिंग के साथियों के साथ शिक्षा प्राप्त कर सकें।

भारत में एकल लिंग विद्यालयों की परंपरा लंबे समय से प्रचलित रही है। इसका मुख्य कारण देश की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना रही है, जिसमें महिलाओं को पुरुषों से अलग रखने के लिए 'पर्दा' प्रथा जैसी परंपराओं का पालन कराया जाता था। वर्तमान समय में, बढ़ते अपराधों के कारण भी कई माता-पिता, विशेष रूप से निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग से आने वाले लोग, अपनी बेटियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं और इसी कारण वे सह-शिक्षा की तुलना में एकल शिक्षा को अधिक सुरक्षित मानते हैं। हालांकि, यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या केवल एकल शिक्षा प्रणाली ही इन सामाजिक चुनौतियों का समाधान हो सकती है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

सह-शिक्षा विद्यालयों में लिंग आधारित भेदभाव, रूढ़ियों और लड़के-लड़कियों की आत्म-छवि को प्रभावित करने वाले कई कारक देखे गए हैं। पश्चिमी देशों में किए गए शोध बताते हैं कि एकल लिंग कक्षाएं छात्रों की अलग-अलग अधिगम शैलियों को ध्यान में रखकर बनाई जाती हैं, जिससे उन्हें समान अवसर प्राप्त हो सकें और वे ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग ले सकें (Spender 1980; Deem Marks, Byrd 1994; Mael) 2004।

इसके विपरीत, सह-शिक्षा प्रणाली में लड़कों का प्रभुत्व अधिक देखा जाता है, जिससे लड़कियों की सहभागिता सीमित हो सकती है।

रेडिकल नारीवादी विचारक स्पेंडर (1980) का मानना था कि सह-शिक्षा प्रणाली को पितृसत्तात्मक समाज द्वारा बनाए रखा गया है, क्योंकि यह पुरुष छात्रों को अधिक लाभ प्रदान करती है। उनके अनुसार, सह-शिक्षा में लड़कियों की उपस्थिति केवल लड़कों की उन्नति को बढ़ावा देने के लिए होती है। दूसरी ओर, एकल लिंग विद्यालयों में लड़कियों को अधिक अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे वे कक्षा में अधिक सक्रिय रूप से भाग ले सकती हैं और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भी अपनी भूमिका निभा सकती हैं। विभिन्न शोधों के अनुसार, इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली लड़कियों की शैक्षणिक उपलब्धियों, आत्म-सम्मान, करियर विकल्पों और लिंग आधारित पूर्वाग्रहों को कम करने में सहायक सिद्ध हुई है (Mael, 2004)।

व्यक्तित्व की अवधारणा

व्यक्तित्व अध्ययन की जड़ें लगभग 2000 वर्ष पूर्व हिप्पोक्रेट्स (370 ईसा पूर्व) के समय से मिलती हैं। हिप्पोक्रेट्स और गैलेन ने यह सिद्धान्त प्रस्तुत किया कि मानव व्यवहार और व्यक्तित्व विशेषताएँ चार भिन्न प्रकार के स्वभावों से निर्मित होती हैं, जो शरीर में मौजूद चार द्रव्यों (ह्यूमर्स) से संबंधित हैंः

1. कोलेरिक स्वभाव – यकृत (लिवर) से उत्पन्न पीला पित्त
2. मेलनकोलिक स्वभाव – गुर्दे (किडनी) से उत्पन्न काला पित्त
3. संग्विन स्वभाव – हृदय से उत्पन्न लाल रक्त
4. फ्लेजमैटिक स्वभाव – फेफड़ों से उत्पन्न सफेद कफ

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

जब शरीर में इन द्रव्यों का असंतुलन होता है, तो मानसिक एवं शारीरिक बीमारियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए, संतुलित व्यक्तित्व को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक माना गया है।

व्यक्तित्व के सिद्धान्त और वर्गीकरण

जर्मन मनोचिकित्सक अर्नस्ट क्रेचमर (1921) ने अपने शोध Physique and Character में शरीर की संरचना और व्यक्तित्व के बीच संबंध की पहचान की। उन्होंने इसे आकृति विज्ञान (Morphological Theory) के रूप में परिभाषित किया। इसके बाद विलियम शेल्डन (1940) ने शरीर के प्रकारों को व्यक्तित्व से जोड़ते हुए उन्हें Somatotypes के रूप में तीन श्रेणियों में विभाजित कियाः

1. एंडोमॉर्फिक (Endomorphic) – मुलायम और गोलाकार शरीर, चर्बी बढ़ने की प्रवृत्ति, सामाजिकता एवं आरामदायक जीवनशैली की प्राथमिकता।
2. मेसोमॉर्फिक (Mesomorphic) – मजबूत मांसपेशियाँ और हड्डियाँ, ऊर्जावान एवं आत्मविश्वासी स्वभाव, वजन बढ़ाने या घटाने की क्षमता।
3. एक्टोमॉर्फिक (Ectomorphic) – दुबला-पतला शरीर, हल्की मांसपेशियाँ और छोटी हड्डियाँ, संवेदनशील और अंतर्मुखी स्वभाव।

फ्रायड और अन्य सिद्धान्तकारों के विचारः

सिग्मंड फ्रायड (1923) ने मानव व्यक्तित्व को जटिल मानते हुए इसे तीन घटकों में विभाजित कियाः

1. इड (Id) – तात्कालिक इच्छाओं और मूल प्रवृत्तियों से संचालित।
2. ईगो (Ego)–यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाने वाला और संतुलन बनाए रखने वाला घटक।
3. सुपरईगो (Superego) – नैतिक मूल्यों और सामाजिक मानदंडों से प्रेरित।

फ्रायड के बाद नव-फ्रायडियन विचारकों जैसे एरिक एरिक्सन, अल्फ्रेड एडलर, करेन हॉर्नी और कार्ल जंग ने व्यक्तित्व पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव को महत्वपूर्ण माना।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

इसके अतिरिक्त, गॉर्डन ऑलपोर्ट (1961) ने व्यक्तित्व को इस प्रकार परिभाषित किया:

"व्यक्तित्व एक व्यक्ति की उन मनो-शारीरिक प्रणालियों का गतिशील संगठन है, जो उसके विशिष्ट व्यवहार और सोच को निर्धारित करती हैं।"

अन्य प्रमुख दृष्टिकोणों में संज्ञानात्मक, अधिगम, जैविक, मानवतावादी और विशेषता-आधारित (Attribute-based) सिद्धान्त शामिल हैं, जिन्हें अब्राहम मास्लो, कार्ल रोजर्स और हंस आइजेंक जैसे विचारकों ने विकसित किया।

समीक्षा सहित्य (Literature Review)

इस विषय पर किये गये पिछले अध्ययनों से पता चलता है कि विद्यालय का वातावरण किशोरों के समाजिक कौशल के निर्माण में महत्वर्पूण भूमिका निभाता है।

1. **एकल-लिंग विद्यालयों का प्रभाव**
   - गुरियन और स्टीफन (2010) ने अपने अध्ययन में बताया कि एकल-लिंग विद्यालयों के छात्र शैक्षणिक रुप से बेहतर प्रदर्शन करते है, लेकिन उनके सामाजिक कौशल का विकास अपेक्षाकृत धीमा हो सकता है।
   - हैलबर्ग (2009) ने पाया कि एकल-लिंग विद्यालयों में पढने वाले छात्रों को विपरीत लिंग के साथ संवाद करने में कठिनाई होती है, जिससे उनके कार्यस्थल और सामाजिक जीवन में चुनौतियॉ आ सकती है।
2. **सह-शिक्षा विद्यालयों का प्रभाव**
   - ली और मार्क (2012) के अनुसार, सह-शिक्षा विद्यालयों के छात्र अधिक सामाजिक रुप से परिपक्व होते है और उनमें नेतृत्व क्षमता अधिक विकसित होती है।
   - स्मिथ एण्ड जोन्स (2015) के अध्ययन में निष्कर्ष निकला कि सह-शिक्षा विद्यालयों में पढने वाले किशोरों में सामाजिक जागरुकता, सहानुभूति और संचार कौशल अधिक विकसित होती है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

3. भारतीय संदर्भ में अध्ययन

- भारतीय शिक्षा प्रणाली में सह-शिक्षा विद्यालयों की संख्या बढ रही है, लेकिन अब भी कई परिवार एकल-लिंग विद्यालयों को प्राथमिकता देते हैं।
- NCERT (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद) की रिपोर्ट (2019) के अनुसार, सह-शिक्षा विद्यालयों के छात्र अधिक मिलनसार, आत्मविश्वासी और व्यवहारिक होते हैं।

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन कौशल के सामाजिक कौशल और उनके विकास पर विद्यालय के प्रकार (एकल-लिंग या सह-शिक्षा) के प्रभाव को समझने के लिए उपयोगी है। निम्नलिखित बिंदु इस शोध के महत्व को स्पष्ट करते है-

1. सामाजिक कौशल का विश्लेषण- यह शोध यह जानने में सहायक होगा कि विभिन्न विद्यालयी व्यवस्थाओं में अध्ययनरत किशोरों के सामाजिक कौशल में किस प्रकार के अंतर पाये जाते हैं।
2. शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाना - अध्ययन के निष्कर्ष नीति-निर्माताओं और शिक्षाविदों को विद्यालयी शिक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधार करने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।
3. मनोवैज्ञानिक विकास की गहरी समझ - यह शोध किशोरों के आत्मविश्वास, संवाद कौशल, नेतृत्व क्षमता और टीम वर्क जैसे पहलुओं पर विद्यालयी वातावरण के प्रभाव को उजागर करेगा।
4. अभिभावकों और शिक्षकों के लिए मार्गदर्शन - अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अभिभावकों और शिक्षकों को यह निर्णय लेने में सहायक करेंगे कि उनके बच्चों के लिए कौन सा विद्यालयी वातावरण अधिक अनुकूल रहेगा।
5. सामाजिक समावेशन को प्रोत्साहन - यह अध्ययन यह स्पष्ट करने में मदद करेगा कि क्या सह-शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों में सामाजिक समावेशन और लिंग- संवदेनशीलता अधिक विकसित होती है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

6. शिक्षा नीति निर्माण में योगदान - शोध के निष्कर्ष सरकार और शैक्षणिक संस्थानों को विद्यालयी संरचना और शिक्षण पद्धतियों में आवश्यक संशोधन करन के लिए उपयोगी हो सकते है।

उद्येश्य (Objective)

1. किशोरावस्था में सामाजिक कौशल के स्तर का पता लगाना।
2. विद्यालय के प्रकार (एकल-लिंग विद्यालय, सह-शिक्षा विद्यालय) के संदर्भ में किशोरावस्था में सामाजिक कौशल के स्तर का पता लगाना।
3. लिंग (बालक, बालिका) के संदर्भ में किशोरावस्था में सामाजिक कौशल के स्तर का पता लगाना।
4. अध्ययन की धारा (कला, विज्ञान, वाणिज्य) के संदर्भ में किशोरावस्था में सामाजिक कौशल के स्तर का पता लगाना।

परिकल्पना (Hypothesis)

1. विद्यालय के प्रकार (एकल-लिंग विद्यालय, सह-शिक्षा विद्यालय) के संदर्भ में किशोरावस्था में सामाजिक कौशल के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही है।
2. लिंग (बालक, बालिका) के संदर्भ मेंकिशोरावस्था में सामाजिक कौशल के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही है।
3. अध्ययन की धारा (कला, विज्ञान, वाणिज्य) के संदर्भ में किशोरावस्था में सामाजिक कौशल के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नही है।

अध्ययन की सीमाएँ (Delimitations):

- यह अध्ययन केवल 13-18 वर्ष के किशोरों तक सीमित रहेगा।
- केवल तीन विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को अध्ययनरत में शामिल किया गया है।
- यह अध्ययन केवल सामाजिक कौशल पर केन्द्रित है; अन्य मनोवैज्ञानिक या व्यवहारिक पहलुओं का मूल्यांकन नही किया गया है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

शोध डिजाइन (Research Design)

इस अध्ययन के लिए वर्णनात्मक तुलनात्मक (Descriptive Comparative) शोध डिजाइन को अपनाया गया है, जो विभिन्न समूहों के सामाजिक कौशल स्तरों में अंतरों को मापने और विश्लेषण करने में सहायक होगा। शोध डिजाइन निम्नलिखित विशेषताओं पर आधारित है:

जनसंख्या (Population)

इस शोध में जनसंख्या उन किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं को संदर्भित करती है जो 13-18 वर्ष की आयु वर्ग में आते है और सहारनपुर जिले के विभिन्न एकल-लिंग एवं सह-शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत है।

इस अध्ययन हेतु तीन विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें एक सह-शिक्षा विद्यालय तथा दो एकल-लिंग विद्यालय शामिल है।

- एकल-लिंग विद्यालय केवल एक ही लिंग (बालक या बालिका) के विद्यार्थियों के लिए होते हैं।
- सह-शिक्षा विद्यालय में दोनों लिंगों (बालक एवं बालिका) के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं।

अतः इस अध्ययन की जनसंख्या उन सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित करती है, जो इन चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत हैं और जिन्हें नमूना चयन प्रक्रिया के तहत अध्ययन में शामिल किया गया है।

नमूना चयन (Sampling)

इस अध्ययन में कुल 200 किशोरावस्था (13 से 18 वर्ष) के छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया। चयन प्रक्रिया में निम्नलिखित विशेषताओं पर आधारित रहीः

1. विद्यालय का प्रकारः

   एकल लिंग विद्यालयों से 100 छात्र-छात्राएं(50 बालक, 50 बालिका) चयनित किये गये।

   सह-शिक्षा विद्यालयों से 100 छात्र-छात्राएं (50 बालक, 50 बालिका) चयनित किये गये।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

2. नमूना चयन प्रक्रियाः

इस अध्ययन में स्तरीकृत याद्दच्छिक (Startified Random) नमूना चयन विधि का प्रयोग किया गया है, जिससे विभिन्न विद्यालयों के प्रतिभागियों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके।

चयन के दौरान यह ध्यान रखा गया कि अलग अलग प्रकार के विद्यालयों के छात्रों को सम्मिलित किया जाये, ताकि निष्कर्ष और प्रासंगिक हों।

3. चयनित विद्यालयों की सूची

क्रमांक	विद्यालय का नाम	बालक	बालिका
1	के0सी0सी0 आर्य कन्या इंटर कालेज सहारनपुर		50
2	आर0सी0 पब्लिक इंटर कालेज सहारनपुर	50	50
3	राजकीय विद्यालय, सहारनपुर	50	

शोध में प्रयुक्त उपकरण (Tools for Data Collection)

इस अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण प्रो0 पुनिता गोविल एवं बोदे सका द्वारा विकसित सामाजिक कौशल मापनी है। यह मापनी किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं के सामाजिक कौशल का मूल्यांकन करने के लिए वैध (Valid) और विश्वस्नीय (Reliable) उपकरण है।

अध्ययन में प्रयुक्त मापनी मॉडल फिट सूचकांक (Model Fit Index) उत्तम पाया गया जिसमेंः

- CFI (Comparative Fit Index) = 0.93
- TLI (Tucker-Lewis Index) = 0.92
- RMEA (Root Mean Square Error of Approximation) = 0.05

इसके अतिरिक्त, इस मापनी की विश्वस्नीयता (Reliability) उच्च स्तर की पायी गयी, जिसका क्रोनबैक अल्फा (Cronbach's Alpha) 0.95 था।

सांख्यिकी तकनीक (Statistical Techniques):

t-test: इस तकनीक का उपयोग यह जॉचने के लिए किया गया कि एकल-लिंग एवं सह-शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों के सामाजिक कौशल स्तर मे कोई महत्वपूर्ण अंतर है या नही।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

ANOVA (Analysis of Variance): इस तकनीक का उपयोग विभिन्न अध्ययन धाराओं (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य) में पढने वाले किशोरों के सामाजिक कौशल स्तर में संभावित अंतर का विश्लेषण करने के लिए किया गया। यह विश्लेषण विद्यालय के प्रकार, लिंग एवं अध्ययन की धारा के आधार पर सामाजिक कौशल में संभावित भिन्नताओं को स्पष्ट करने में सहायक रहा।

विश्लेषण एवं चर्चा

मानक प्रतिशत (Percentage) के आधार पर सामाजिक कौशल स्तर

प्रतिशत (Percentage)	**कच्चा स्कोर** (Raw Score)	**सामाजिक कौशल स्तर** (Level of Social Skills)
P95 एवं अधिक	141+	बहुत उच्च सामाजिक कौशल
P90- P94	135-140	उच्च सामाजिक कौशल
P75- P89	127-134	औसत से अधिक सामाजिक कौशल
P50- P74	119-126	औसत सामाजिक कौशल
P25- P49	109-118	निम्न सामाजिक कौशल
P10- P24	93-108	बहुत निम्न सामाजिक कौशल
P9 एवं कम	92 या उससे कम	अत्यंत निम्न सामाजिक कौशल

प्रस्तुत तालिका के अनुसार किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं का सामाजिक कौशल स्कोर 127 है, यह "औसत से अधिक सामाजिक कौशल"(P75- P89) की श्रेणी में आता है। इसका अर्थ है कि संबंधित छात्र-छात्राओं के सामाजिक कौशल औसत से बेहतर है, और वह समाज में अच्छी तरह से घुल-मिल सकता है। हॉलाकि, सामाजिक कौशल को और अधिक परिष्कृत करने के लिए संवाद, सहयोग और नेतृत्व क्षमता को और विकसित करने की आवश्यकता हो सकती है।

लिंग के आधार पर:

लिंग	नमूना आकार (C.N.)	माध्य	मानक	मूल्य	X

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–I, Issues– I July-September: 2024

		(Mean)	विचलन(S.D.)		
बालक	105	120.09	23.33		
बालिका	95	133.24	13.91	4.79	00

व्याख्याः- बालिकाओं का सामाजिक माध्य (133.24) बालकों में सामाजिक कौशल माध्य (120.09) से अधिक है जो संकेत करता है कि बालिकाओं का सामाजिक कौशल स्तर बालिकाओं की तुलना में उच्चस्तर है। यह अन्तर सांस्कृतिक, सामाजिक और शैक्षिक कारणों से हो सकता है।

विद्यालय के प्रकार के आधार परः

लिंग	नमूना आकार (C.N.)	माध्य (Mean)	मानक विचलन(S.D.)	मूल्य	X
सह-शिक्षा विद्यालय	100	136.13	7.66		
एकल-लिंग विद्यालय	100	116.57	24.32	7.66	00

व्याख्याः- सह-शिक्षा विद्यालयों के किशोरावस्था छात्र-छात्राओं का सामाजिक कौशल माध्य (136.13) एकल लिंग विद्यालयों के किशोरावस्था छात्र-छात्राओं के सामाजिक कौशल माध्य (116.57) से अधिक है जो यह दर्षाता है सह-शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरावस्था का कौशल छात्र-छात्राओं का सामाजिक उच्चतर हो सकता है।

अध्ययन की धारा के आधार परः

अध्ययन की धारा	नमूना आकार (C.N.)	माध्य (Mean)	मानक विचलन(S.D.)	मूल्य	X
कला	55	129.84	71.17	6.00	
विज्ञान	102	135.20	8.55	76.44	00
वाणिज्य	43	100.91	23.75		

व्याख्याः- विज्ञान धारा में किशोरावस्था में छात्र-छात्राओं सामाजिक कौशल माध्य (135.20) सबसे अधिक है, इसके बाद कला (192.84) वाणिज्य (100.91) के किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं का स्थान है जो यह दर्षाता है कि विज्ञान के किशोरावस्था में छात्र-छात्राओं सामाजिक कौशल स्तर अन्य बालकों की तुलना में उच्चतर हो सकता है।

आपेक्षित निष्कर्ष (Expected findings)

अध्ययन से अपेक्षित है कि विद्यालय का प्रकार (एकल लिंग या सह-शिक्षा) या लिंग (बालक या बालिका) सामाजिक कौशल पर महत्वपूर्ण प्रभाव नही डालते हैं हालांकि, अध्ययन की धारा (कला, विज्ञान, वाणिज्य) सामाजिक कौशल के स्तर को प्रभावित कर सकती है जिसमें विज्ञान में किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं का स्थान है जो दर्षाता है कि विज्ञान के किशोरावस्था में छात्र-छात्राओं सामाजिक कौशल स्तर उच्च हो सकता है।

निष्कर्ष (Consclusion)

इस अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि विद्यालय में लिंग एवं प्रकार सामाजिक कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका नही निभाते है हालांकि अध्ययन की धारा का सामाजिक कौशल पर प्रभाव हो सकता है जो किशोरावस्था के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक गतिविधियों पाठयक्रम भी प्रकृति के कारण हो सकता है।

सन्दर्भ

- ऑलपोर्ट, ग. (1961). व्यक्तित्व का सिद्धान्त और व्यवहार। पर्सनालिटी एंड सोशल साइकोलॉजी रिव्यू, 5(2), 117-130।
- डंमसए थ्ण् ;2004द्ध. एकल-लिंग और सह-शिक्षा विद्यालयः प्रभावशीलता पर दृष्टिकोण। अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, 59(2), 100-110.शेल्डन, . (1940). व्यक्तित्व और शरीर के प्रकारों के बीच संबंध। अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन, 40(3), 245-2681
- डेफेनबाखर, जे. एल., ओटिंग, ई. आर., लिंच, आर. एस., और मॉरिस, सी. डी. (1996)। क्रोध की अभिव्यक्ति और इसके परिणाम। बिहेवियर रिसर्च एंड थेरेपी, 34(7), 575-590।

- नोब्रे, मिरेला आर., एवं फ्रीटयस, लुकास सी. (2021)। बचपन और किशोरावस्था में सामाजिक कौशल और सामाजिक चिंताः एक साहित्य समीक्षा। मनोविज्ञानः सिद्धान्त और अभ्यास।
- पैटरसन, जी. आर. (1986)। असामाजिक लड़कों के लिए प्रदर्शन मॉडल। अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, 41(4), 432-444।
- प्रजापति, आर., शर्मा, बी., एवं शर्मा, डी. (2014)। जीवन कौशल शिक्षा का महत्व। समकालीन शिक्षा अनुसंधान, 10(1), 1-6।
- फ्रैऊड, स. (1923). व्यक्तित्व की संरचनाः इड, ईगो और सुपरईगो। साइकोएनालिटिक स्टडीज जर्नल, 12(4), 89-1021
- बियरमैन, के. एल., और मॉन्टीमी, टी. (1993)। छोटे बच्चों में आक्रामकता को कम करने के लिए सामाजिक कौशल प्रशिक्षण। जर्नल ऑफ क्लिनिकल चाइल्ड साइकोलॉजी, 22(1), 51-62।
- म्यूस, आर. ई. (1975)। किशोरावस्था के सिद्धान्त। न्यूयॉकर्ः रैंडम हाउस।
- शर्मिला, अब्दुल सत्तार, एवं सविता सालोमन। (2020)। एकल एवं सहशिक्षा विद्यालयों के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- शेल्डन, . (1940). व्यक्तित्व और शरीर के प्रकारों के बीच संबंध। अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन, 40(3), 245-2681
- स्लाबी, आर. जी., और गुएरा, एन. जी. (1998)। किशोर अपराधियों में आक्रामकता के संज्ञानात्मक मध्यस्थक डंमस, थ्. (2004). एकल-लिंग और सह-शिक्षा विद्यालयः प्रभावशीलता पर दृष्टिकोण। अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, 59(2), 100-110.